मुक्त बेसिक शिक्षा पाठ्यक्रम

विषय : हिन्दी (B-101)

स्तर–'ख'

1.0 औचित्य

भाषा के ज्ञान के बिना समाज में गतिशीलता संभव नहीं है। समाज और देश के विकास के लिए यह गतिशीलता अनिवार्य है। अतः भाषा का ज्ञान भी अनिवार्य हे। हमारे देश में भाशा ज्ञान की दृष्टि से जनसंख्या के अनेक स्तर हैं। इसलिए भाषा का व्यवहार करने वालों की चिंतन क्षमता में कई स्तरों पर अंतर है। एक बड़ा समूह ऐसा है, जो अनुभवी हैं लेकिन भाषा ज्ञान के क्षेत्र में उसने अभी शुरूआत ही की है। उसकी इच्छा है कि वह अपने इस ज्ञान को और विकसित करे। यह समूह ऐसा है, जो समाचार चर्चाएँ आदि सुनकर राष्ट्रीय मुद्दों से परिचित हुआ है। संस्थान के 'क' स्तर के पाठ्यक्रम से इसे भाषाई स्तर पर बहुत लाभ हुआ है, पर इसकी भाषा ज्ञान की इच्छाएं बढ़ी है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने स्तर 'ख' पर ऐसी पाठ्य-सामग्री को चुना है, जिसके आधार पर शिक्षार्थी सुनने और बोलने का कौशल तो विकसित करेंगे ही, इनसे अधिक पढ़ने-लिखने में कुशल होंगे। इससे ये शिक्षार्थी देश की मुख्यधारा के चिंतन एवं तदनुसार कर्मक्षेत्र में अपना सहयोग दे पाएँगे।

लक्ष्य–भाषा संबंधी अन्य दक्षताओं के तहत नए शब्दों से परिचित होकर उनके अर्थ जानना, विचारों की गहराई को समझना, व्यावहारिक व्याकरण, भाषा का सही प्रयोग तथा स्वअध्ययन को भी इस पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

2.0 पूर्व अपेक्षाएँ

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश से पूर्व शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह स्तर 'क' का पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा कर चुका हो अथवा उसके स्तर का ज्ञान रखता हो।

- अपने आसपास की आम बोलचाल की हिंदी को बोलता और समझता हो;
- बोलचाल में आनेवाले हिंदी शब्द सीखे गए कुछ नए और सरल वाक्य लिख पाता हो;
- अपने आसपास के सामाजिक मुद्दों पर बातचीत में शामिल होकर खुद भी हसतक्षेप करता हो;
- कविता और गद्य की विधाओं, जैसे- नाटक, जीवनी, पत्र आदि से परिचित हो और स्वयं भी कुछ-कुछ लिख पाता हो।

3.0 उद्देश्य

पाठ्यक्रम के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं-

3.1 सामान्य उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी-

- व्यावहारिक और व्यावसायिक संदर्भों में हिंदी का सटीक प्रयोग कर सकेंगे;

- किसी विषय पर अपने विचारों या अपने भावों को लिखकर प्रकट कर सकेंगे;
- साहित्य को पढ़कर उसका रसास्वादन कर सकेंगे;

3.2 विशिष्ट उद्देश्य

इसके अध्ययन के बाद शिक्षार्थियों में निम्नलिखित दक्षताएँ विकसित हो सकेंगी

3.2.1 सुनना और बोलना

1. मौखिक निर्देशों के अनुसार परस्पर सहयोग के साथ सामूहिक क्रियाकलाप कर सकेंगे।
2. परिचित एवं अपरिचित स्थितियों में होने वाले वार्तालाप में भाग लेकर अपना योगदान दे सकेंगे।
3. किसी भी वस्तु या विचार को सुनकर अपनी पसंद या नापसंद को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।
4. अपने पड़ोस गली, मुहल्ले की समस्याओं को सुनकर उनके विषय में चर्चा कर सकेंगे।
5. भाषा, संस्कृति, धर्म, जाति, लिंग, वर्ग आदि के प्रति अपने विचार व्यक्त कर संवेदनशील दृष्टिकोण अपना सकेंगे।
6. लोककथाओं, लोककलाओं एवं घरेलू उद्योग धन्धों के विषय में पढ़कर उनके बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
7. ग्राम पंचायत, नगर पालिकाओं आदि के गठन, संरचना और उनके कामों पर चर्चा कर सकेंगे।
8. भाषा को संसार और स्वयं के अनुभवों को समझने-समझाने का माधयम मानते हुए, उसका प्रयोग कर सकेंगे।
9. अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में छपी सामग्री को पढ़कर टिप्पणी कर सकेंगे।

3.2.2 पढ़ना और लिखना

1. पढ़े हुए विषय को समझकर लिख सकेंगे।
2. पोस्टर, चार्ट, नक्शा, विज्ञप्ति, सूचना आदि को पढ़कर समझ सकेंगे और उसके विषय में लिख सकेंगे।
3. हस्तलिखित सामग्री (पत्र आदि) को पढ़ सकेंगे।
4. समाचार-पत्र और पत्रिकाओं को पढ़कर अपने आस-पास के वातावरण और समाज के प्रति अपने विचार लिख सकेंगे।
5. पढ़े हुए विषयों में पढ़ी हुई वस्तु के तार्किक सम्बन्ध को समझ सकेंगे और टिप्पणी लिख सकेंगे।

3.3.3 पाठ के विचार बिंदुओं को सुनकर तथा पढ़कर समझना

1. पठित वस्तुओं के भाव को समझ सकेंगे।
2. कार्य-कारण सम्बन्धों को पढ़कर, समझकर उनकी पहचान कर सकेंगे।
3. किंतु, परन्तु, आदि, तथापि आदि योजक शब्दों का प्रयोग करते हुए प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे।
4. सूक्तियों, कहावतों और लोकोक्तियों को समझकर उनका अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे।

3.3.4 व्यावहारिक व्याकरण और संरचनात्मक रूप

1. वाक्य संरचना के सरल व्यवहारगत नियमों को समझना।
2. पूर्ण-विराम, अल्पविराम, प्रश्नवाचक, आश्चर्य बोधक, उद्धरण चिह्नों की पहचान और प्रयोग करना।
3. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और उनके प्रकारों को समझना और उनका प्रयोग।
4. उपसर्गों और प्रत्ययों का प्रयोग समझना।
5. पर्यायवाची और विलोम शब्दों को समझना और उनका निर्माण करना।
6. लिंग व वचन को समझना।
7. क्रिया व क्रिया विशेषण को समझना।

3.2.5 शब्द-भंडार

1. दैनिक जीवन में काम आने वाले अधिक से अधिक सामान्य एवं प्रयोजनमूलक तथा व्यावहारिक शब्दों की पहचान व उनका प्रयोग करना।

3.2.6 स्व-अधययन

1. सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी, संचार साधनों-रेडियो, दूरदर्शन, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं आदि से अपने लिए लाभप्रद सामग्री का चयन करना एवं उनका प्रयोग करना।
2. लघु विश्वकोश का प्रयोग करना (जहाँ आवश्यक हो)।
3. शब्दकोश का प्रयोग करना।

4.0 पाठ्यक्रम का परिचय

शिक्षार्थियों में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना, कौशल का विकास करने के लिए विविध प्रकार की सामग्री प्रदान की जाएगी। यह सामग्री 'क' स्तर का विकास करने वाली है और चारों कौशलों की क्रमशः बढ़ोतरी करती है। भाषा-शिक्षण के चारों कौशल परस्पर संबद्ध हैं, किंतु मूल्यांकन की सुविधा के लिए इनके अलग-अलग लक्ष्य रखे गए हैं।

5.0 पाठ्यक्रम का विवरण

पाठ्यक्रम को 100 घंटों में बांटा गया है। प्रत्येक कौशलों के लिए निम्नानुसार समय निर्धारित किया गया है।

5.1 सुनना और बोलना

समय–10 घंटे

लक्ष्य–इस इकाई का लक्ष्य शिक्षार्थियों के पहले से समृद्ध सुनने और बोलने के कौशल को नई जानकारियों के आधार पर विकसित करना है। यह जानकारी उनके ज्ञान में वृद्धि करेगी और इसके आधार पर वे दूसरों से बेहतर संवाद कायम कर सकेंगे। यह कौशल अनेक प्रकार के अभ्यासों एवं प्रस्तावित सामग्री के आधार पर विकसित किया जाएगा।

5.2 पढ़ना

समय–40 घंटे

लक्ष्य – शिक्षार्थियों के पठन कौशल का विकास करने के लिए काव्य तथा गद्य से संबंधित विविध प्रकार की सामग्री प्रदान की जा रही है, जिसमें कविताएँ, कहानियाँ, लोककथा, निबंध, नाटक, जीवनी, संस्मरण, यात्रा वर्णन, पत्र–लेखन, संवाद/वार्ता हैं। स्पष्ट है कि यह सामग्री 'क' स्तर का विकसित रूप है और व्यावहारिक ज्ञान में समृद्धि करने वाली है। यह अपेक्षा की जाती है कि यह सामग्री एक भाषिक कौशलों को बढ़ाएगी तथा दूसरी ओर साहित्य की नई–नई विधाओं की ओर शिक्षार्थियों को आकर्षित करेगी। प्रस्तावित पाठ्यक्रम में प्रस्तुत की जाने वाली पठन–सामग्री की रूपरेखा इस प्रकार है–

कविताएँ – कविताओं के तीन पाठ हैं, जिनमें से एक में मध्ययुगीन कवियों का काव्य हे, शेष पाठ खड़ी बोली हिंदी में हैं।

गद्य – इस खण्ड में आकर्षक कहानियां, लोककथा, नाटक, जीवनी, निबंध, संस्मरण, वार्ता/संवाद एवं पत्र हैं। इन पाठों की विषयवस्तु आम जीवन, सामाजिक समस्याओं, जीवन मूल्यों, प्रेरक व्यक्तित्त्वों आदि से संबद्ध होगी और उनमें परोक्ष रूप से प्रौढ़ शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के प्रमुख बिंदुओं का ध्यान रखा जाएगा।

5.3 लिखना

समय–40 घंटे

लक्ष्य – इस कौशल का विकास करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम में लेखन संबंधी 'क' स्तर से आगे की कक्षा का व्यावहारिक ज्ञान, जैसे–लेखन के नियम और कविता, कहानी, पत्र से आगे बढ़कर और भी विधाओं के लेखन को रखा गया है, जो इस प्रकार है:

कविता लेखन
कहानी लेखन
पत्र लेखन
यात्रा लेखन
संवाद लेखन
निबंध लेखन

इसका उद्देश्य शिक्षार्थी के लेखन कौशल को अधिकाधिक पुष्ट करना है।

5.4 व्याकरण तथा भाषा-प्रयोग

समय-10 घंटे

लक्ष्य - इस स्तर पर 'क' स्तर पर समझाए गए व्याकरण को तो रखा ही गया है, भाषा-ज्ञान के विकास के लिए नई जानकारी भी दी गई है। व्याकरण एवं भाषा प्रयोग को सरल एवं रोचक ढंग से समझाने के लिए दिए गए पाठों को ही आधार बनाया गया है। इससे लाभ यह होगा कि शिक्षार्थी के समक्ष व्याकरण संबंधी उदाहरण भी होंगे, वह व्याकरण को सही ढ़ंग से ग्रहण कर पाएगा। इसके लिए निर्धारित बिंदु इस प्रकार हैं-

- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण
- लिंग और वचन
- उपसर्ग और प्रत्यय
- पर्यायवाची ओर विलोम शब्द
- वाक्य रचना
- विराम चिह्न

6. पाठ विवरण

क्रम सं.	पाठ	विधा	विषय	व्याकरण
1.	प्रार्थना	कविता	देश प्रेम	
2.	पंच परमेश्वर, ईदगाह बूढ़ी काकी, नमक का दारोगा	कहानी	पंचायत, बुजर्गों का सम्मान, संवेदनशीलता, ईमानदारी	वाक्य संरचना और विराम चिन्ह
3.	शहीद भगत सिंह, ऊधम सिंह	जीवनी	बलिदान, त्याग, साहस, देश भक्ति	संज्ञा और उसके भेद
4.	यह लघु सरिता का जल (गोपाल सिंह नेपाली)	कविता कविता	प्रकृति और पर्यावरण प्रकृति और पर्यावरण	विराम चिन्ह और लिंग भेद
5.	उत्तर पूर्व से संबंधित	लोककथा	लोक संस्कृति और परम्पराओं का परिचय	सर्वनाम और उसके भेद
6.	माउन्टआबू, मनीकरण, केरल या अन्य वाचा	यात्रा	स्थान परिचय, पर्यटन संवर्द्धन	पयार्यवाची और विलाम शब्दों का ज्ञान
7.	मनरेगा, एन.आर.एच.एम., शिक्षा का अधिकार	वार्ता/संवाद	राष्ट्रीय कार्यक्रमों की जानकारी	विशेषण और उसके भेद
8.	दोहे-वीर, रहीम, तुलसी, घाघ, दादू, गुरूनानी	कविता	नैतिक-शिक्षा तथा जीवन मूल्य	वचन
9.	हास्य कथा	कहानी	व्यंग्य विनोद	क्रिया और उसके भेद
10.	पंचायती राज	निबंध	पंचायती व्यवस्था का ज्ञान तथा सत्ता का विकेन्द्रीकरण	क्रिया विशेषण

11.	प्रेरक प्रसंग (लालबहादुर शास्त्री)	संस्मरण	प्रेरणा एवं व्यक्तित्व विकास	उपसर्ग
12.	पर्यायवरण प्रदूषण, बेटी बचाओ, भ्रूण हत्या	कविता	पर्यावरण चेतना बेटा-बेटी समानता	लिंग-वचन
13.	आंतकवाद, हिंसा, भ्रष्टाचार	नाटक	समाज सुधार, राष्ट्र सुरक्षा	प्रत्यय
14.	मिलावट, स्वरोजगार, कुटीर उद्योग, मताधिकार का प्रयोग	पत्र-लेखन		

7. अध्ययन-योजना

यह पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से दिया जाएगा। पाठ्यक्रम मूलतः स्वाध्याय पर आधारित है। इस बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थी के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर सामग्री तैयार की गई है। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं, ताकि शिक्षार्थी की धारण-क्षमता विकसित हो सके तथा, साथ ही, लिखने व विचार करने की क्षमता भी बढ़े।

शिक्षार्थियों के लिए अध्ययन केन्द्रों पर सम्पर्क-कक्षाओं का भी प्रावधान है। इन सम्पर्क-कक्षाओं में शिक्षार्थी अपनी विषय सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे। साथ ही, वहाँ पर अन्य शिक्षार्थियों से भी इन समस्याओं पर चर्चा कर सकेंगे। शिक्षार्थी साक्षरता केन्द्रों / प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर भी अपनी विषय-सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे।

8. मूल्यांकन-योजना

8.1 स्व-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इसके लिए हर पाँच पाठ के बाद एक जाँच पत्र दिया गया है। जाँच पत्र में उन्हीं चार पाठों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गए हैं। शिक्षार्थी को इन प्रश्नों के उत्तर देने हैं। पुस्तक के अन्त में इन जाँच पत्रों के सही उत्तर दिए गए हैं। शिक्षार्थी अपने उत्तरों का सही उत्तरों से मिलान करके अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इस तरह पाठ्यक्रम में स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है।

8.2 बाह्य-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत शिक्षार्थी का बाह्य मूल्यांकन होगा। इसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रश्न पत्र तीन घंटे मिनट का होगा। इसमें पाठ आधारित प्रश्न होंगे। बोध पर आधारित प्रश्न भी होंगे। साथ ही, सामान्य समझ पर आधारित प्रश्न भी होंगे। प्रश्न वस्तुनिष्ठ, अति लघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय होंगे।

मुक्त बेसिक शिक्षा पाठ्यक्रम

पर्यावरण अध्ययन (B-102)

स्तर 'ख'

1. औचित्य

स्तर 'ख' के पाठ्यक्रम का आधार स्तर 'क' पर शिक्षार्थी द्वारा अध्ययन किया गया पाठ्यक्रम है। स्तर 'क' से आगे की पढ़ाई के लिए उनके प्राप्त ज्ञान को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए कुछ विषयों पर उनके पूर्व-ज्ञान में आगे की जानकारी जोड़नी होगी, साथ ही, कुछ नए विषयों का ज्ञान भी देना होगा, जिससे वे आगे के स्तरों से जुड़ने के लिए तैयार हो सकें। साथ ही, यह भी जरूरी है कि वे अपने देश, अपनी संस्कृति, अपने पर्यावरण के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करें। वे समाज के उपयोगी व सशक्त अंग बन सकें तथा देश के सामर्थ्यवान व जागरूक नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभा सकें।

पर्यावरण अध्ययन के स्तर – ख का यह पाठ्यक्रम इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। पाठ तैयार करने में शिक्षार्थियों के परिवेश को ध्यान में रखा गया है।

2. पूर्व अपेक्षाएँ

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह मुक्त बेसिक शिक्षा के स्तर – क का पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा कर चुका हो अथवा उसके स्तर का ज्ञान रखता हो।

3. उद्देश्य

पाठ्यक्रम के सामान्य व विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं –

3.1 सामान्य उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी –

- अपने परिवेश के किसी विषय पर अपने विचार लिखकर प्रस्तुत कर सकेंगे।
- अपने देश की समृद्ध संस्कृति के प्रति गौरव का अनुभव कर सकेंगे।
- प्राचीन धरोहरों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए तदनुसार व्यवहार कर सकेंगे।
- सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की दिशा में प्रयास करेंगे तथा एक स्वच्छ, जागरूक समाज के निर्माण में सहयोगी बन सकेंगे।
- खेती व अपने दैनिक जीवन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रेरित हो सकेंगे।

- अपने मताधिकार के बारे में जान सकेंगे, उसका उचित उपयोग करने के लिए प्रेरित हो सकेंगे व लोकतांत्रिक व्यवस्था को सशक्त बनाने में अपना योगदान दे सकेंगे।
- समाज के उपयोगी अंग बनने की दिशा में प्रयास करेंगे।
- अपनी शब्द-संपदा को बढ़ा सकेंगे।
- नई जानकारियाँ प्राप्त करने व उन्हें अपनाने के लिए स्वयं को वैचारिक स्तर पर तैयार कर सकेंगे।
- देश के उपयोगी व उत्पादक नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभा सकेंगे।

3.2 विशिष्ट उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी –

- अपने देश की मिली-जुली संस्कृति व उसके महत्त्व का वर्णन कर सकेंगे।
- देश की प्राकृतिक सम्पदा व उसके संरक्षण से परिचित हो सकेंगे।
- देश की धरोहरों की सूची बना सकेंगे।
- शांति व समरसता के सिद्धांत को समझते हुए अंगीकार कर सकेंगे।
- छोटे परिवार की अवधारणा को समझा सकेंगे।
- विभिन्न सामाजिक मुद्दों – बालिका शिक्षा, दहेज, कन्या भ्रूण हत्या के प्रति जागरूक हो सकेंगे तथा इन विषयों से जुड़े कानूनों की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अपने देश के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास जान सकेंगे तथा स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- भारत के राज्यों तथा इसके प्राकृतिक संसाधनों, जलवायु की विविधता, प्रमुख फसलों, वनस्पतियों का वर्णन कर सकेंगे।
- अपने देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था से परिचित होकर मतदान के अपने अधिकार के प्रति जागरूक हो सकेंगे।
- पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न पहलुओं को समझ सकेंगे।
- मिट्टी, फसलों व खेती के बारे में अपने पूर्व ज्ञान में नई वैज्ञानिक जानकारी जोड़ सकेंगे।
- अपने दैनिक जीवन में ऊर्जा के महत्त्व को समझ सकेंगे। साथ ही, ऊर्जा की बचत के तरीकों व वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोतों के बारे में जान सकेंगे।
- ग्रहों, उपग्रहों के बारे में अपने पूर्व ज्ञान को विस्तार दे पाएँगे।
- विभिन्न शारीरिक रोगों, उनके कारणों व उनसे बचाव के तरीकों को जान सकेंगे।
- मानव-शरीर के आन्तरिक अंगों की संरचना व उनके कार्यकलापों का वर्णन कर सकेंगे।
- कूड़ा-कचरा निपटान के विभिन्न उपायों का प्रयोग कर सकेंगे।

4. पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को आसान भाषा में विकसित किया गया है तथा पाठों में विवरण व उदाहरण सामान्य जीवन से जुड़े हुए दिए गए हैं। यह पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से दिया जाएगा।

संपूर्ण पाठ्यक्रम को 15 पाठों में बाँटा गया है। प्रत्येक पाठ को विषय के अनुसार विभिन्न इकाइयों में बाँटा गया है। इससे शिक्षार्थी को पाठ पढ़ने में आसानी होगी। चूंकि इन पाठों का निर्माण दूरस्थ शिक्षा से होगा, अतः स्वमूल्यांकन हेतु अनेक तरीकों पाठों में दिए जाएंगे।

5. पाठ्यक्रम संरचना

यह पाठ्यक्रम 100 घंटे का है। इसे 4 मॉड्यूल एवं 15 पाठों में बाँटा गया है। समयाविधि एवं अंकों का विवरण इस प्रकार है-

क्र. सं.	मॉड्यूल	पाठ संख्या	समय (घंटों में)	अंक
1.	हमारी संस्कृति एवं धरोहर	1-3	20	20
2.	हमारा भारत	4-6	20	20
3.	हमारा पर्यावरण	7-11	35	35
4.	हमारा शरीर एवं स्वास्थ्य	12-15	25	2
	कुल		100	100

प्रत्येक पाठ को विषयानुसार विभिन्न इकाइयों में बाँटकर प्रस्तुत किया गया है। इससे शिक्षार्थी को पाठ पढ़ने व अध्ययन करने में आसानी होगी।

6. पाठ्यक्रम विवरण

पाठ-1 : भारत की सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक धरोहर का संरक्षण व सम्मान

1. भारत की मिली-जुली संस्कृति का महत्त्व और उसका संरक्षण।
2. सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी, महत्त्व तथा संरक्षण।
3. भारत की प्राकृतिक धरोहर, जैसे - वन सम्पदा, वन्य जीव, जल-सम्पदा और खनिज सम्पदा की जानकारी, महत्त्व और संरक्षण

पाठ-2 : भारतीय समाज में शांति, एकता और समरसता

1. भारत में भाषायी, सांस्कृतिक, सामाजिक व धार्मिक विविधता।
2. विविधता में एकता के सूत्र।

3. शांति और सामाजिक समरसता का महत्त्व और हमारे दायित्व।

4. सम्राट अशोक एवं सम्राट अकबर द्वारा शांति व सद्भावना के लिए किए गए प्रयास।

पाठ-3 : हमारे सामाजिक मुद्दे

1. छोटे परिवार का सिद्धांत, महत्त्व और हमारे दायित्व।
2. शिक्षा का महत्त्व, बालिका शिक्षा और हमारे दायित्व।
3. स्त्री-पुरुष समानता की आवश्यकता, असमानता के कारण, महिलाओं के कानूनी अधिकार।
4. दहेज के कारण, हानियाँ, दहेज प्रतिषेध अधिनियम-1961, स्त्री-धन, कानून के अनुसार दण्ड का प्रावधान।

पाठ-4 : हमारा स्वतंत्रता संग्राम

1. भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना और गुलामी का दौर।
2. स्वाधीनता संग्राम, प्रमुख क्रांतिकारी, उनका संघर्ष और आजादी की प्राप्ति।

पाठ-5 : भारत के राज्य और उनका प्राकृतिक स्वरूप

1. भारत के राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश, भारत के मानचित्र में उनकी स्थिति।
2. दुनिया के मानचित्र में भारत की स्थिति, प्राकृतिक स्वरूप और संसाधन।
3. भारत की विभिन्न फसलें व वनस्पतियाँ।

पाठ-6 : हमारा समुदाय और लोक प्रशासन

1. भारतीय लोकतंत्र और शासन प्रणाली - व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका।
2. ग्रामीण लोक प्रशासन - ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत, इन पंचायतों का गठन, कार्य एवं अधिकार।
3. नगरीय लोक प्रशासन - नगर पंचायत, नगर पालिका परिषद, नगर निगम, इनका गठन, कार्य एवं अधिकार।

पाठ-7 : पौधों और जंतुओं का जीवन

1. पौधों और जंतुओं की एक-दूसरे पर निर्भरता और आहार श्रृंखला।
2. प्राकृतिक संतुलन का महत्त्व, प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने के परिणाम।
3. पर्यावरण, वन एवं जंतुओं का संरक्षण।

पाठ-8 : मृदा और फसलें

1. मृदा अथवा मिट्टी का महत्त्व, मिट्टी के प्रकार और उनमें पैदा होने वाली फसलें।
2. फसल उत्पादन हेतु आवश्यक कृषि कार्य – खेत की तैयारी, बुआई, बीज शोधन, निराई-गुड़ाई, सिंचाई, खाद एवं उर्वरक, फसल-सुरक्षा और कटाई-मड़ाई।
3. मौसम के अनुसार उगाई जाने वाली फसलें – रबी, खरीफ और जायद।

पाठ-9 : मृदा और वन संरक्षण

1. मिट्टी का कटाव और उससे हानियाँ, कटाव के कारण तथा मिट्टी का कटाव रोकने के उपाय।
2. मिट्टी का कटाव रोकने में वन संरक्षण की भूमिका।
3. मृदा प्रदूषण और उससे होने वाली हानियाँ, मृदा प्रदूषण के कारण और मृदा प्रदूषण रोकने के उपाय, उपायों में जैविक खेती का विशेष संदर्भ।

पाठ-10 : ऊर्जा के स्रोत और उनका महत्त्व

1. ऊर्जा की आवश्यकता और महत्त्व।
2. ऊर्जा के स्रोत – समाप्त होने वाले, न समाप्त होने वाले।
3. ऊर्जा के प्रकार – भोजन से प्राप्त ऊर्जा, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा, जैविक ऊर्जा, विद्युतीय ऊर्जा और चुम्बकीय ऊर्जा।
4. ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग और ऊर्जा की बचत करने के उपाय।

पाठ-11 : सौर मंडल और पृथ्वी

1. सौर मंडल, ग्रह और उपग्रह तथा उनकी विशेषताएं।
2. चंद्रमा की कलाएँ और तिथियों का निर्धारण।
3. प्राकृतिक और कृत्रिम उपग्रहों में अंतर, क्रृत्रिम उपग्रहों का महत्त्व और उपयोगिता।
4. पृथ्वी का परिचय, अक्षांश और देखांतर रेखाएँ, देशांतर रेखाओं के आधार पर समय का ज्ञान।
5. रात और दिन का छोटा-बड़ा होना, 21 जून की स्थिति, 22 दिसम्बर की स्थिति, 21 मार्च व 23 सितम्बर की स्थिति।

पाठ-12 : खाना और सेहत

1. पोषक तत्त्वों की कमी से होने वाले रोग, उनकी पहचान एवं बचाव – अनीमिया, क्वाशियोरकर, सूखा रोग, रतौंधी, सुखंडी, घेंघा, दिमागी धीमापन और बेरी-बेरी।

2. कम खर्च में पौष्टिक आहार, किन स्थितियों में भोजन पर खास ध्यान देने की जरूरत है।
3. खाने की चीजों का भंडारण – सुखाकर ठंडा करके, तेल और मसाले द्वारा, रसायनों का प्रयोग करके, पकाकर, ठंड से जमाकर, डिब्बों में बंद करके।

पाठ–13 : मानव शरीर के आंतरिक अंग

1. शरीर के आंतरिक अंगों की पहचान और महत्त्व।
2. कंकाल के मुख्य भाग और उनके कार्य, मांसपेशियों के प्रकार और कार्य।
3. पाचन नाल–मुँह, भोजन नली, आमाशय, छोटी आँत, बड़ी आँत, मलाशय, मलद्वार तथा लीवर के कार्य।
4. फेफड़ों की संरचना, कार्य प्रणाली और महत्त्व।
5. हृदय की संरचना, कार्य प्रणाली और महत्त्व।
6. गुर्दों की संरचना, कार्य प्रणाली और महत्त्व।
7. मस्तिष्क की संरचना, कार्य प्रणाली और महत्त्व।
8. स्त्री–पुरुष के जनन अंग, कार्य प्रणाली और महत्त्व।

पाठ–14 : सामान्य रोग, उनके कारण, रोकथाम और बचाव

1. संक्रामक और असंक्रामक रोग।
2. प्रमुख संक्रामक रोगों के लक्षण, कारण और बचाव – हैजा, मलेरिया, डेंगू, फीलपाँव, टाइफाइड, तपेदिक (टी०बी०), दस्त और पेचिस, सर्दी, जुकाम व फ्लू, निमोनिया, एच०आई०वी०/एड्स।
3. कुछ असंक्रामक रोग, उनके लक्षण, कारण और बचाव – दिल का दौरा, मधुमेह, कैंसर।
4. रोगों से बचे रहने के प्रमुख उपाय – स्वच्छता, रोगी की सेवा में सावधानी, टीके, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, गुटखा, शराब आदि से दूरी।

पाठ–15 : कूड़ा–कचरा और उसका निपटान

1. कूड़ा–कचरा और उसका वर्गीकरण।
2. कूड़े–कचरे की प्रकृति के अनुसार उसका निपटान, जैविक और अजैविक कूड़े के लिए अलग–अलग कूड़ेदान।
3. पर्यावरण की स्वच्छता और हमारे दायित्व।

7. अध्ययन योजना

यह पाठ्यक्रम मूलत: स्वाध्याय पर आधारित है व दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से दिया जाएगा। इसके लिए शिक्षार्थियों के मानसिक स्तर व परिवेश को देखते हुए पठन सामग्री तैयार की गई है। चूँकि पाठ्यक्रम स्वाध्याय पर आधारित है अत: हर पाठ के अंत में पाठ से सम्बन्धित प्रश्न दिए गए हैं, ताकि शिक्षार्थी की धारण-क्षमता व लिखने की दक्षता भी विकसित हो सके।

शिक्षार्थियों के लिए अध्ययन-केन्द्र पर सम्पर्क-कक्षाओं का भी प्रावधान है। इन कक्षाओं में शिक्षार्थी अपनी विषय सम्बन्धी समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। साथ ही, वहाँ पर अपने साथियों से भी इन समस्याओं पर चर्चा कर सकेंगे। शिक्षार्थी साक्षरता केन्द्रों / प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर भी अपनी विषय-सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे।

8. मूल्यांकन योजना

8.1 स्व-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी स्वयं का मूल्यांकन करते रहेंगे। इसके लिए प्रत्येक तीन पाठ के बाद जाँच पत्र दिया गया है। इस जाँच पत्र में उन्हीं तीन पाठों से सम्बन्धित प्रश्न दिए गए हैं। शिक्षार्थी उन प्रश्नों के उत्तर देंगे तथा अंत में दिए गए उन प्रश्नों के सही उत्तर से अपना उत्तर मिलाएँगे। इस तरह, पाठ्यक्रम में स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है।

8.2 बाह्य मूल्यांकन

पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत शिक्षार्थी का बाह्य मूल्यांकन होगा। इसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रश्न पत्र 3 घंटे का होगा। इसमें पाठ आधारित प्रश्न होंगे। बोध पर आधारित प्रश्न भी होंगे। साथ ही, सामान्य समझ पर आधारित प्रश्न भी होंगे। प्रश्न वस्तुनिष्ठ, अति लघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय होंगे।

मुक्त बेसिक शिक्षा पाठ्यक्रम
गणित (B-103)
स्तर 'ख'

1. मूलाधार

मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़) स्तर 'ख' पर अधिगम हेतु गणित एक महत्त्वपूर्ण विषय है। गणित की अवधारणाओं के माध्यम से शिक्षार्थी वास्तविक जीवन की परिचित एवं अपरिचित परिस्थितियों में समस्या समाधान की योग्यता अर्जित करता है। परिशुद्धता, विवेकपूर्ण एवं विश्लेषणात्मक चिंतन जैसी योग्यताओं के विकास में गणित का विशेष योगदान है। इस स्तर पर शिक्षार्थी में गणित सीखने से परिस्थितियों एवं दैनिक जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ने के लिए विभिन्न अवधारणाओं के समझ के आधार पर अधिक बल मिलता है। इस स्तर पर शिक्षार्थी में समस्या समाधान के कौशलों, अभिवृत्ति एवं कार्यशैली विकसित करने का प्रयास है। शिक्षार्थी से अपेक्षित है कि उसने 'क' स्तर की मुक्त बेसिक शिक्षा प्राप्त कर गणित का आधार सुदृढ़ किया है। वर्तमान स्तर पर पाठ्यचर्या का निर्माण इस उद्देश्य से किया गया है कि शिक्षार्थी दैनिक जीवन की विभिन्न गतिविधियों में गणित की प्रासंगिकता से अवगत हो सके।

2. उद्देश्य

मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़) स्तर 'ख' पर गणित पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य शिक्षाथियों को निम्न कार्यों में सक्षम बनाना है :

- आधारभूत अवधारणाओं, तथ्यों, प्रतीकों तथा प्रक्रियाओं का समझना तथा संबंधित ज्ञान अर्जित करना।
- अपने परिवेश में मापन संबंधी अनुभवों को अर्जित करना तथा उनको अपने जीवन से उपयोग करना।
- शाब्दिक समस्याओं का गणितीय रूप में हल प्रस्तुत करना।
- गणित एवं इसकी अवधारणाओं के प्रयोग के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करना।
- गणित के व्यापक प्रयोग की सराहना करने के अवसर प्रदान करना।
- शिक्षार्थी को आगामी स्तर के आधार को सुदृढ़ करना।
- शिक्षार्थी में आत्मविश्वास जागृत करना जिससे अगली पीढ़ी की शिक्षा में वह सकारात्मक भूमिका अदा कर सके।

3. पाठ्यचर्या संरचना

मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़) स्तर 'ख' पर गणित की पाठ्यचर्या को आठ पाठों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक पाठ में विभिन्न प्रकरणों का समावेश किया गया है। पाठों की संख्या, सुझावित अध्ययन अवधि तथा प्रत्येक इकाई के लिए निर्धारित अंक इस प्रकार है :

मुक्त बेसिक शिक्षा स्तर 'ख' की पाठ्यचर्या

क्रम संख्या	पाठ	अध्ययन अवधि (घंटों में)	अंक
1.	संख्याएँ	10	10
2.	जोड, घटाव, गुणा और भाग	20	20
3.	भिन्न	15	15
4.	दशमलव	15	15
5.	मापन	15	15
6.	परिमाप, क्षेत्रफल तथा आयतन	10	10
7.	ज्यामिति	10	10
8.	आँकड़ों का प्रबंधन	05	05
	योग	**100**	**100**

4. पाठ्यचर्या विवरण

पाठ 1 : संख्याएँ

1001 (एक हजार एक) से 1,00,00,000 (एक करोड़) तक की संख्याओं को अंकों व शब्दों में पढ़ना और लिखना, संख्याओं में अंकों के स्थानीय मान, संख्याओं का विस्तारित रूप, संख्याओं की तुलना करना तथा उन्हें घटते-बढ़ते क्रम में लिखना, दिए गए अंकों से सबसे छोटी और सबसे बड़ी संख्या बनाना।

पाठ 2 : जोड़, घटाव, गुणा और भाग

संख्याओं में जोड़ तथा घटाव करना, तीन अंकों तक की संख्याओं से गुणा तथा भाग करना, संख्याओं को गुणा करते समय उनके गुणनफल तथा भाग करते समय उनके भागफल का अनुमान लगाना तथा परिणाम की वास्तविक प्रक्रिया द्वारा जाँच करना, चार मूल संक्रियाओं - **जोड, घटाव, गुणा और भाग** पर आधारित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करना।

पाठ 3 : भिन्न

भिन्न के बारे में जानना तथा भिन्न को पढ़ना, लिखना और समझना, चित्रों द्वारा भिन्न को समझना, दी गई भिन्न के तुल्य भिन्न बनाना तथा समझना, भिन्न को निम्नतम रूपों में व्यक्त करना, भिन्न की तुलना करना तथा उन्हें बढ़ते और घटते क्रम से लिखना और समझना, मिश्र भिन्न को विषम भिन्न तथा विषम भिन्न को

मिश्र भिन्न में बदलना, भिन्नों के जोड़, घटाव, गुणा तथा भाग की क्रियाओं को करना व समझना, भिन्न पर आधारित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करना।

पाठ 4 : दशमलव

दशमलव का अवधारणा, 10, 100, 1000 आदि हर वाली भिन्नों को दशमलव रूप में लिखना, दशमलवों को साधारण भिन्नों तथा साधारण भिन्नों को दशमलवों में बदलना, दशमलवों की तुलना करना तथा उन्हें घटते व बढ़ते क्रम में लगाना, दशमलवों में जोड़, घटा, गुणा व भाग (केवल पूर्ण संख्याओं के द्वारा) की संक्रियाएँ करना, 100 हर वाले भिन्न को प्रतिशत के रूप में समझना, दशमलवों को प्रतिशत में बदलना तथा प्रतिशत को दशमलवों में बदलना, किसी इकाई में दी गई माप को उच्चतर या निम्नतर इकाई वाली मापों में बदलना, दशमलवों तथा प्रतिशतों पर आधारित दैनिक जीवन की ष्टाब्द समस्याओं को हल करना।

पाठ 5 : मापन

दैनिक जीवन में मापन की उपयोगिता, लम्बाई मापन की इकाइयों की जानकारी, भार या वजन मापन की इकाइयों की जानकारी, धारिता मापन की इकाइयों की जानकारी, ताप मापन की इकाइयों की जानकारी, समय मापन की इकाइयों की जानकारी, भारतीय मुद्रा की जानकारी, विभिन्न मापों से संबंधित जोड़, घटा, गुणा और भाग, मापन पर आधारित दैनिक जीवन से संबंधित हिसाब-किताब।

पाठ 6 : परिमाप, क्षेत्रफल तथा आयतन

परिमाप का अर्थ, उपयोग तथा समतल आकृतियों का परिमाप ज्ञात करना, क्षेत्रफल का अर्थ, उपयोग तथा समतल आकृतियों का क्षेत्रफल ज्ञात करना, आयतन का अर्थ, उपयोग तथा ठोस आकृतियों का आयतन ज्ञात करना।

पाठ 7 : ज्यामिति

अपने आस-पास की विभिन्न प्रकार की आकृतियों की जानकारी, सममिति का अर्थ समझना तथा सममित वस्तुओं और आकृतियों को पहचानना, टेढ़ी-मेढ़ी रेखा, सरल रेखा, रेखाखण्ड तथा किरण को पहचानना, विभिन्न आकृतियों में कोणों को पहचानना, कोणों को समकोण, न्यूनकोण तथा अधिककोण के रूप में पहचानना, चाँदे की सहायता से कोण मापना तथा कोण बनाना, वष्टत्त का अर्थ समझना तथा बिना परकार के तथा परकार की सहायता से वष्टत्त खींचना, वष्टत्त से संबंधित पदों जैसे केंद्र, त्रिज्या द्धअव्यासत्रः, व्यास, परिधि को पहचानना, परिवेश में समानान्तर एवं लम्ब रेखाओं को समझना।

पाठ 8 : आँकड़ों का प्रबंधन

आँकड़े क्या हैं एवं इनकी जरूरत क्यों है?, आँकड़ों को इकट्ठा करने के तरीके, आँकड़ों की व्यवस्था, आँकड़ों को चित्ररूप में समझना, आँकड़ों से परिणाम निकालना।

5. मूल्यांकन योजना

5.1 स्व-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी अपना स्वयं का मूल्यांकन करता रहेगा। इसके लिए प्रत्येक पाठ के बाद अभ्यास पत्र दिया गया है, जिसमें उस पाठों से सम्बन्धित प्रश्न हैं। शिक्षार्थी उन प्रश्नों के उत्तर देंगे तथा अंत में दिए गए उन प्रश्नों के सही उत्तर से अपना उत्तर मिलाएंगे। अभ्यास हेतु जांच पत्र भी दिए गए हैं। इन जांच पत्रों को हल करके अपने उत्तरों का मिलान करेंगे। इस तरह, पाठ्यक्रम में स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है।

5.2 बाह्य मूल्यांकन

पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत शिक्षार्थी का बाह्य मूल्यांकन होगा। इसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। इस मूल्यांकन में शिक्षार्थी की लिखित परीक्षा होगी। इसकी अवधि 3 घंटे की है। प्रश्न पत्र में पाठ आधारित प्रश्न हैं व बोध पर आधारित प्रश्न भी हैं। प्रश्न वस्तुनिष्ठ भी है, अति लघु उत्तरीय भी हैं तथा लघु उत्तरीय भी होंगे।

मुक्त बेसिक शिक्षा पाठ्यक्रम
बेसिक कम्प्यूटर कौशल (B-104)
स्तर-'ख'

1. औचित्य

भारत एक विकासशील देश है और कहते हैं कि विकास यदि सर्वांगीण न हो अर्थात सभी क्षेत्रों में न हो तो वह सार्थक नही हो पाता। किसने सोचा था कि कंप्यूटर जैसी एक छोटी सी मशीन भी हमारे विकास में अहम् भूमिका निभाएगी। एक मशीन और हजारों काम। अब तो यह हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है। ऐसा होना आवश्यक भी है जब बिजली, पानी, शिक्षा, अस्पताल, रेल, व्यापार आदि सभी जगह कंप्यूटर का व्यापक रूप में प्रयोग हो रहा है। इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि हम कंप्यूटर के बारे में जानकारी प्रापत करें। जाकारी प्राप्त करने के साथ ही यह भी आवश्यक है कि कैसे हम अपने दैनिक प्रयोग में कंप्यूटर का कुशल रूप से व्यवहार कर सकते हैं। बेसिक कंप्यूटर कौशल का यह पाठ्यक्रम कंप्यूटर ज्ञान के साथ ही इसके अनुप्रयोग पर भी केन्द्रित है।

2. पूर्व अपेक्षायें

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश से पूर्व शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है।

- स्तर 'क' का कम्प्यूटर पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा कर चुका है अथवा समकक्ष ज्ञान रखता है।
- कम्प्यूटर के सभी उपकरणों को पहचानता है।
- कम्प्यूटर उपकरणों का प्रयोग करना जानता है।
- कम्प्यूटर का इस्तेमाल कर सकता है।
- कम्प्यूटर में पेंट प्रोग्राम का इस्तेमाल कर विभिन्न आकृति बना सकता है और उनको रंगीन बना सकता है।
- वर्ड प्रोग्राम इस्तेमाल कर चिट्टी व आवेदन पत्र टाईप कर सकता है।
- डॉक्यूमेंट सेव करने के लिये फोल्डर बना सकता है।

3. उद्देश्य

पाठ्यक्रम के सामान्य व विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं-

3.1 सामान्य उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी स्वतंत्र रूप से कम्प्यूटर का इस्तेमाल कर, सुचारू रूप से तालिका, चित्र के साथ डॉक्यूमेंट बना कर विभिन्न लोगों को व्यक्तिगत पत्र भेज सकता है। शिक्षार्थी स्प्रेडशीट बनाकर जटिल गणना कर छाप सकता है तथा टेक्स्ट के साथ प्रेजेन्टेशन कर सकता है। प्रेजेन्टेशन में इन्टरनेट से सूचना

ढूंढ़ कर मिला सकता है। कम्प्यूटर की सुरक्षा की जरूरत समझता है और इन्टरनेट में खतरों से बचने का तरीका जानता है। ई-मेल के फायदे व खतरों से वाकिफ हैं।

3.2 विशिष्ट उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी-

1. डॉक्यूमेंट में चित्र, टेबल डालकर सुचारू रूप से सजा सकेगा।
2. हिन्दी का डॉक्यूमेंट भी टाईप कर सकेगा।
3. एक डॉक्यूमेंट को विभिन्न व्यक्तियों को भेज सकेगा।
4. स्प्रेडशीट का इस्तेमाल कर सरल गणित का उपयोग कर सकेगा और इसको प्रिंट कर सकेगा।
5. टेक्सट, चित्र व तालिका (टेबल), सुचारू रूप से सजा कर प्रेजेन्टेशन तैयार कर सकेगा।
6. इन्टरनेट समझ सकेगा और उस ढूंढ़ कर सूचना का आदान-प्रदान कर सकेगा।
7. कम्प्यूटर व इन्टरनेट की सुरक्षा व खतरों से वाकिफ होगा और बचने के उपाय जानेगा।
8. ई-मेल के फायदे जानेगा और फाइल्स दूसरों को भेज सकेगा।

4 पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय

पाठ्यक्रम को सात पाठों में बांटा गया है। इनमें दिये गये बिंदुओं को विविध उपकरणों के साथ उनके प्रयोग आदि को भी समझाया गया है।

5. पाठ्यक्रम की संरचना

यह पाठ्यक्रम कुल 100 घंटे का है। इसे कुल 7 पाठों में बाँटा गया है। पाठ्यक्रम का समयाविधि व अंकों के आधार पर विभाजन इस प्रकार है:

क्र. सं.	पाठ	समय	अंक
1.	पुनरावलोकन	10 घंटे	10
2.	वर्ड प्रोसेसिंग: विशेषताएँ	15 घंटे	15
3.	स्प्रेड शीट	15 घंटे	15
4.	प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन)	15 घंटे	15
5.	इंटरनेट और उसकी उपयोगिताएँ	15 घंटे	15
6.	कम्प्यूटर सिक्योरिटी (सुरक्षा)	15 घंटे	15
7.	ई-मेल	15 घंटे	15
	कुल	**100 घंटे**	**100**

6. पाठ्यक्रम का विवरण

पाठ-1: पुनरावलोकन

कम्प्यूटर का अर्थ और उसका उपयोग, कम्प्यूटर के विभिन्न अंग और उनका चालन, ऑपरेटिंग सिस्टम का अर्थ और उसका प्रयोग, कम्प्यूटर के प्रयोग से डॉक्यूमेंट, प्रार्थना पत्र आदि बनाकर भेजना।

पाठ-2: वर्ड प्रोसेसिंग: विशेषताएँ

वर्ड प्रोसेसर का अर्थ और प्रयोग, वर्ड प्रोसेसर से टेबल बनाकर डाटा भरना, डाक्यूमेंट में चित्र लगाना, फॉन्ट बदलकर हिन्दी व अन्य भाषाओं में डॉक्यूमेंट बनाना, डॉक्यूमेंट को विभिन्न व्यक्तियों को व्यक्तिगत रूप से भेजना।

पाठ-3: स्प्रेड शीट

स्प्रेडशीट का अर्थ और इससे लाभ, स्प्रेडशीट बनाना, स्प्रेडशीट के विभिन्न भाग, स्प्रेडशीट में उपलब्ध गणित के फॉमूले और उनका इस्तेमाल, स्प्रेडशीट में डाटा भरना तथा गलतियों को सुधारना।

पाठ-4: प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन)

प्रेजेन्टेशन का अर्थ और उसकी आवश्यकता, प्रेजेन्टेशन बनाने का तरीका, प्रेजेन्टेशन बनाने के बाद प्रस्तुतीकरण करना, प्रेजेन्टेशन में चित्र, ग्राफ और लिखित सामग्री डालना, प्रेजेन्टेशन की फॉरमैटिंग करना अर्थात् प्रेजेन्टेशन की सामग्री के बदलाव करना व उन्हें सही प्रकार रखना आदि।

पाठ-5: इंटरनेट और उसकी उपयोगिताएँ

इन्टरनेट का अर्थ, इन्टरनेट का इतिहास तथा उपयोगिता, इन्टरनेट का व्यावहारिक उपयोग, इन्टरनेट से जुड़ना, वर्ल्ड वाइड वेब (www), वेबसाइट और वेब पेज, वेबसाइटों को खोलना, उनसे सूचनाएं प्राप्त करना एवं समाचार पत्र पढ़ना आदि।

पाठ-6: कम्प्यूटर सिक्योरिटी (सुरक्षा)

कम्प्यूटर व इन्टरनेट सुरक्षा की आवश्यक, सुरक्षा के उपलब्ध उपाय, पासवर्ड बनाने व सुरक्षित रखने के नियम, कम्प्यूटर वायरस का अर्थ, इसके खतरे और उनका निवारण।

पाठ-7: ई-मेल

ई-मेल का अर्थ, ई-मेल का पता या ई-मेल एड्रेस, ई-मेल की कार्य प्रणाली, सामान्य डाक और ई-मेल में अंतर, ई-मेल के लाभ, ई-मेल एकाउंट, ई-मेल मैसेज भेजना, एड्रेस बुक, फाइल अटैचमेंट।

7. अध्ययन-योजना

यह पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से दिया जाएगा। पाठ्यक्रम मूलतः स्वाध्याय पर आधारित है। इस बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थी के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर सामग्री तैयार की गई है। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं, ताकि शिक्षार्थी की धारण-क्षमता विकसित हो सके तथा, साथ ही, लिखने व विचार करने की क्षमता भी बढ़े।

शिक्षार्थियों के लिए अध्ययन केन्द्रों पर सम्पर्क-कक्षाओं का भी प्रावधान है। इन सम्पर्क-कक्षाओं में शिक्षार्थी अपनी विषय सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे। साथ ही, वहाँ पर अन्य शिक्षार्थियों से भी इन समस्याओं पर चर्चा कर सकेंगे। शिक्षार्थी साक्षरता केन्द्रों / प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर भी अपनी विषय-सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे।

8. मूल्यांकन-योजना

8.1 स्व-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इसके लिए हर पाँच पाठ के बाद एक जाँच पत्र दिया गया है। जाँच पत्र में उन्हीं चार पाठों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गए हैं। शिक्षार्थी को इन प्रश्नों के उत्तर देने हैं। पुस्तक के अन्त में इन जाँच पत्रों के सही उत्तर दिए गए हैं। शिक्षार्थी अपने उत्तरों का सही उत्तरों से मिलान करके अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इस तरह पाठ्यक्रम में स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है।

8.2 बाह्य-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत शिक्षार्थी का बाह्य मूल्यांकन होगा। इसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रश्न पत्र तीन घंटे मिनट का होगा। इसमें पाठ आधारित प्रश्न होंगे। बोध पर आधारित प्रश्न भी होंगे। साथ ही, सामान्य समझ पर आधारित प्रश्न भी होंगे। प्रश्न वस्तुनिष्ठ, अति लघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय होंगे।